अरुणाचल में वन औषधियों का अवैध व्यापार बेरोक-टोक जारी

■ अनिल यादव

पासीघाट, ९ दिसंबर। वन विभाग और राज्य मेडिसिनल प्लांट बोर्ड के अफसरों को पहले से पता था कि मुख्यमंत्री गेगांग अपांग की पुत्रवधू आद्री एंग्लो इंडियन हैं, एमबीबीएस हैं और जान्सन एंड हापकिंस से पब्लिक हेल्थ में एमडी हैं। उनकी जानकारियों में एक जानकारी और जुड़ गयी है कि उन्होंने अपने चाय बागान में गोलमिर्च की खेती शुरू कर दी है। वे इसे इस तरह प्रचारित कर रहे हैं जैसे आद्री के बागान में गोलमिर्च उन्हीं की प्रेरणा से उगी है और जल्दी ही पूरे राज्य के आदिवासी औषधीय पौधों की खेती करने लगेंगे।

अरुणाचल के अफसरों और वनस्पति-विशेषज्ञों की कल्पित बातों के छल्लों से दूर सच्चाई यह है कि पूरे राज्य में औषधीय पौधों का अवैध व्यापार बेरोक-टोक चल रहा है, जिसकी वजह से यहां की बहुश्रुत जैव-विविधता खतरे में है और कई महत्वपूर्ण प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं।

मुख्यमंत्री की पुत्रवधू को इन अफसरों पर दया और हँसी दोनों आती है। क्योंकि आद्री ने पासीघाट के करीब ओयान में करीब ४०० हेक्टेयर में फैले अपने चायबागान में पिछले साल शौकिया तौर पर कालीमिर्च के तीन-चार सौ पौधे लगाये थे। जिनसे ४० क्विंटल उपज हुई जो शिलांग के बाजार में तीन सौ रुपये क्विंटल की दर से बिकी। आद्री को इन अफसरों की तरह दिवास्वप्नों में जीने की लत नहीं लगी है। उनका कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने जब से जंगलों से पेड़ काटने पर प्रतिबंध लगाया है, राज्य में बदहाली बढ़ी है। बड़ी तादाद में बच्चों को स्कूल छोड़ना पड़ा है। ऐसे में जंगल के औषधीय पौधों को निकालकर व्यापारियों के हाथ बेचने के अलावा लोगों के पास आमदनी का कोई और जरिया नहीं बचा है। इन पौधों की नकदी खेती अभी बहुत दूर की बात है क्योंकि उसके लिए पर्याप्त जागरुकता और आधारभूत संसाधन अभी नहीं हैं।

खुशनुमा तथ्यों से कागजों का पेट भरने में व्यस्त इटानगर के इन अफसरों के बीच कुछ ऐसे भी हैं जो सच्चाई पर परदा नहीं डालते। वन एवं पर्यावरण के अधीन सिल्वीकल्चर विभाग के फारेस्ट अफसर पी. पर्टिन स्वीकार करते हैं कि चिरौता, नीसी, इलायची, जिरेनियम, बाच (राइजोम), टैक्सस और मिसिमी तीता का अवैध व्यापार चल रहा है। इसे रोक पाना इसलिए संभव नहीं हो पा रहा है क्योंकि ज्यादातर जंगल आदिवासियों की सामुदायिक ■ शेष पृष्ठ ६ पर

अरुणाचल में वन औषधियों का.....

संपत्ति हैं और वे सैकड़ों साल से आजीविका के लिए यह धंधा करते आये हैं । यह ठीक है कि जैव विविधता खतरे में है लेकिन उन्हें अचानक जबरदस्ती रोका गया तो वे भड़क जाएंगे और उन इलाकों में प्रशासन चलाना मुश्किल हो जाएगा । राज्य वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक एस.एन. हेगड़े थोड़ी सावधानी के साथ कहते हैं कि अवैध व्यापार सिर्फ उन्हीं जंगलों से हो रहा है जो संरक्षित नहीं है । हम इसे हतोत्साहित करने और औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहे हैं । उनका यह भी कहना है कि यहां से पौधों की तस्करी कोलकता और दिल्ली के फार्मास्युटिकल उद्योगों के एजेंट करा रहे हैं । वैसे यह यहां सर्वघोषित तथ्य है ।

इटानगर से भालुकपांग, दिरांग, बोमडिला होते हुए चीन की सीमा छूते बर्फीले तवांग की ओर चलते हुए कस्बों और बाजारों में व्यापारी का सामान्य अभिनय करें तो अनायास यह पता चल जाता है कि औषधीय पौधों का किस कदर संगठित तरीके से जंगलों से दोहन हो रहा है और उससे भी अधिक संगठित नेटवर्क के जरिए असम की सीमा पार कराकर टूकों को कोलकता के अंतर्राष्ट्रीय दवा-बाजार तक पहुंचाया जा रहा है । इस नेटवर्क में कृषि और जंगलात महकमे के अफसर, कर्मचारी, पुलिस वाले, ठेकेदार, दलाल और दूसरे राज्यों के प्रशिक्षित बेरोजगार डाक्टर सभी शामिल हैं । चालक शक्ति अबाध पैसा है जिसे घूस, मुनाफा, कमीशन या दस्तूरी कुछ भी कहा जा सकता है ।

राजधानी के प्रवेशद्वार बंदरदेवा और थोड़ी दूर पर बसे दोइमुख निरजुली मे चोपचीनी, रक्तचंदन, स्मरणशक्ति के टानिकों में इस्तेमाल होने वाले होमियोमेलिना (सुगंध मंत्री) और रुद्राक्ष का धंधा चल रहा है । दिलचस्प यह है कि आदिवासी इन पौधों को जंगलों से इकट्ठा करने का काम उत्तर प्रदेश के एक आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज से प्रशिक्षित झांसी के एक बेरोजगार नौजवान की देखरेख में कर रहे हैं ताकि कहीं कोई गलतफहमी न हो और माल की गुणवत्ता अच्छी रहे । तेजपुर के बाजार में पिपली (पाइपर लांगम) आदिवासियों से व्यापारी खुलेआम साठ रुपये किलो खरीद रहे हैं । व्यापारी बताते हैं कि वे इसी तरह तिनसुकिया के बाजार में आदिवासियों से अफीम (पैपेवरसोमिनिफेरम) खरीदते हैं, जो वे लोहित और दिबांग से लेकर वहां पहुंचते हैं । इस पौधे से हेरोइन भी निकाली जाती है । दो साल पहले तक तिनसुकिया में काफी मात्रा में अगर चांगलांग से आ रहा था, जो इन दिनों मुश्किल से मिल रहा है । दिबांग से ही आने वाले मिसिमी तीता की मांग बहुत ज्यादा है लेकिन आपूर्ति नहीं हो पा रही है । यह पौधा सिर्फ अरुणाचल में ही पाया जाता है जो आंखों की बीमारियों के इलाज में काम आता है ।

नौ हजार फुट की ऊंचाई पर बसे बोमडिला का नाम सुनने में होम्योपैथी की किसी दवा जैसा लगता है लेकिन यह छोटा-सा कस्बा पौधों के व्यापार का बड़ा केंद्र है । यहां इस व्यापार के सबसे बड़े कारोबारी मोम्पा आदिवासी टेम्पा छिरिंग हैं जो बड़े पैमाने पर पौधे एकत्र कराकर व्यापारियों को देते हैं । कई घरों में इलीसियम (लीसी) और चिरायता के बोरे सुरक्षित हैं, जिन्हें व्यापारी के आने का इंतजार है । बोमडिला से थोड़ा पहले के कस्बे रूपा में नेपालियों के पास जिनसेंग और टेक्सस (हिमालयन इयू) उपलब्ध है जो उन्होंने स्थानीय लोगों से खरीदा है । इस व्यापार में नेपालियों की विश्वसनीयता थोड़ी कम है, वे नकली पौधों की भी सप्लाई कर देते हैं । बोमडिला से ऊपर नाफरा, दिरांग, जंग, तवांग, लुमला में जिनसेंग, कुटकी और इयू के ठेकेदार हैं । इनमें से कई तिब्बती चिकित्सा पद्धति के जानकार हैं, जो इन पौधों से दवाएं बनाकर बेचते भी हैं । व्यापारी अरुणाचल को जिलों के हिसाब से नहीं फारेस्ट डिवीजनों के नाम से जानते हैं, उनका यकीन करें तो शेरगांव, मागलो, हापोली, पासीघाट, नामसाई, जयरामपुर सभी रेंजों में कोई न कोई खास पौधा जरूर है जिसकी फार्मास्यूटिकल उद्योग में बेहद मांग है ।

(सेंटर फार साइंस एंड इनवायरनमेंट की चतुर्थ मीडिया फेलोशिप के अध्ययन पर आधारित)